एचएएल का महारत्न दर्जा: एयरोस्पेस उद्योग में भारत का विकास

14 OCT 2024

केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों ने स्वतंत्रता के बाद से राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। ऐसे समय में जब भारत को विभिन्न क्षेत्रों में खोज, नई तकनीक और निवेश हासिल करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ा। इस अवसर पर केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम (सीपीएसई) ने देश की जरूरतों को पूरा किया है। वे देश में औद्योगिक गतिविधि के लिए मुख्य स्रोत के रूप में कार्य करना जारी रखते हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

इस प्रतिबद्धता का एक शानदार उदाहरण हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल) है। जिसने प्रतिष्ठित महारत्न का दर्जा प्राप्त किया है। यह मान्यता प्राप्त करने वाला भारत का यह 14वाँ केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उद्यम (सीपीएसई) बन गया है। यह मील का पत्थर एचएएल के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। जो भारतीय एयरोस्पेस और रक्षा क्षेत्र में एक प्रमुख कम्पनी है। वित्त सचिव के नेतृत्व वाली अंतर-मंत्रालयी समिति (आईएमसी) और कैबिनेट सचिव की अध्यक्षता वाली शीर्ष समिति दोनों की सिफारिशों के बाद वित्त मंत्री ने इसे मंजूरी दी है।

हिएलि
HAL
Hindustan Aeronautics Limited (HAL)
becomes the 14th Maharatna CPSE
लोक उद्यम विभाग
DEPARTMENT OF PUBLIC ENTERPRISES

महारत्न का दर्जा समझना

सरकार ने वैश्विक प्रमुख बनने की यात्रा में प्रतिस्पर्धात्मक लाभ वाले सीपीएसई की पहचान करने और उनका समर्थन करने के लिए 1997 में ‘नवरत्न’ योजना शुरू की। इस योजना के अंतर्गत ‘नवरत्न’ सीपीएसई को पूंजीगत व्यय, संयुक्त उद्यम और मानव संसाधन प्रबंधन में अधिकार दिए गए थे। चूंकि इनमें से कई कंपनियाँ अपने समकक्षों की तुलना में काफी बड़ी हो गई थीं, इसलिए भारतीय बहुराष्ट्रीय कंपनियों (एमएनसी) बनने की क्षमता रखने वालों को मान्यता देने के लिए एक नए वर्गीकरण- 'महारत्न' की आवश्यकता हुई। यह उच्च दर्जा अन्य 'नवरत्न' कंपनियों को प्रोत्साहित करता है, ब्रांड मूल्य को बढ़ाता है, और सीपीएसई को अधिक शक्तियाँ सौंपने की अनुमति देता है। इससे और विकास तथा अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा मिलता है।

महारत्न का दर्जा भारत में सीपीएसई को दिया जाता है। इससे उन्हें अधिक परिचालन और वित्तीय स्वायत्तता मिलती है। इस दर्जे हासिल करने के लिए, कंपनियों को विशिष्ट मानदंडों को पूरा करना होगा। इसमें शामिल हैं:

1. नवरत्न का दर्जा: कंपनी को पहले नवरत्न का दर्जा दिया जाना चाहिए।

2. शेयर बाजार में सूचीबद्ध : कंपनी को भारतीय शेयर बाजार में सूचीबद्ध होना चाहिए, जो सार्वजनिक हिस्सेदारी के संबंध में भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) के नियमों का अनुपालन करती हो।

3. वित्तीय प्रदर्शन: पिछले तीन वर्षों में औसत वार्षिक कारोबार 25,000 करोड़ रुपये से अधिक रहा हो।

इसी अवधि के दौरान औसत वार्षिक शुद्ध संपत्ति 15,000 करोड़ रुपये से अधिक हो।

पिछले तीन वर्षों में कर के बाद औसत वार्षिक शुद्ध लाभ 5,000 करोड़ रुपये से अधिक हो।

4. वैश्विक उपस्थिति: कंपनी के पास महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय संचालन या वैश्विक उपस्थिति होनी चाहिए।

एचएएल का वित्तीय प्रदर्शन

वित्त वर्ष 2023-24 में एचएएल ने 28,162 करोड़ रुपये का प्रभावशाली कारोबार और 7,595 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ दर्ज किया। इससे भारत में एक अग्रणी सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम के रूप में इसकी स्थिति मजबूत हुई। यह वित्तीय सफलता एचएएल की रणनीतिक पहलों और एयरोस्पेस उद्योग में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका का प्रमाण है।

महारत्न दर्जे का आशय

महारत्न का दर्जा प्राप्त करने से एचएएल को बढ़ी हुई वित्तीय स्वायत्तता प्राप्त होती है, जिससे वह बिना किसी पूर्व सरकारी अनुमोदन के महत्वपूर्ण निवेश निर्णय लेने में सक्षम हो जाता है। इस स्वायत्तता से परियोजना के त्वरित कार्यान्वयन, नवाचार को बढ़ावा देने और परिचालन दक्षता में वृद्धि होने की उम्मीद है।

इसके अलावा, यह दर्जा एचएएल को भारत में सबसे प्रभावशाली और वित्तीय रूप से स्थिर सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में से एक बनाता है। यह न केवल देश के भीतर बल्कि वैश्विक स्तर पर भी इसके रणनीतिक महत्व को उजागर करता है।

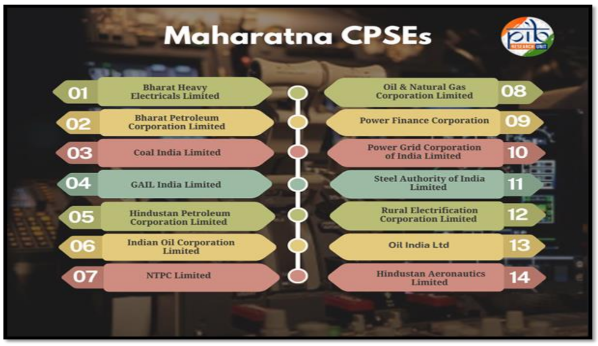

Maharatna CPSEs

01 Bharat Heavy Electricals Limited
02 Bharat Petroleum Corporation Limited
03 Coal India Limited
04 GAIL India Limited
05 Hindustan Petroleum Corporation Limited
06 Indian Oil Corporation Limited
07 NTPC Limited
08 Oil & Natural Gas Corporation Limited
09 Power Finance Corporation
10 Power Grid Corporation of India Limited
11 Steel Authority of India Limited
12 Rural Electrification Corporation Limited
13 Oil India Ltd
14 Hindustan Aeronautics Limited

रणनीतिक महत्व

एचएएल भारत की रक्षा क्षमताओं में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह सैन्य विमानन में आत्मनिर्भरता पर ध्यान केंद्रित करता है। कंपनी के विकास- जैसे कि लाइट कॉम्बैट एयरक्राफ्ट (एलसीए), तेजस और लाइट यूटिलिटी हेलीकॉप्टर (एलयूएच), भारतीय सशस्त्र बलों के आधुनिकीकरण के लिए केंद्रीय हैं। नवाचार और गुणवत्ता के लिए एचएएल की प्रतिबद्धता ने इसे वैश्विक एयरोस्पेस उद्योग में एक महत्वपूर्ण कंपनी के रूप में स्थापित किया है।

स्वदेशी एयरो इंजन उत्पादन के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत को मजबूत करना

आत्मनिर्भर भारत के लिए एक महत्वपूर्ण प्रगति में रक्षा मंत्रालय (एमओडी) ने 9 सितंबर 2024 को हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल) के साथ Su-30MKI विमान के लिए 240 AL-31FP एयरो इंजन के लिए एक अनुबंध पर हस्ताक्षर किए। इसका मूल्य 26,000 करोड़ रुपये से अधिक है। यह अनुबंध स्वदेशी विनिर्माण के प्रति प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है, क्योंकि इंजन एचएएल के कोरापुट डिवीजन में बनाए जाएंगे। इससे वायु सेना की परिचालन क्षमताएं मजबूत होंगी। एचएएल का लक्ष्य अगले आठ वर्षों में सालाना 30 इंजन तैयार करना है, साथ ही कार्यक्रम के पूरा होने तक स्वदेशीकरण को 63प्रतिशत तक बढ़ाने की योजना है। इससे मरम्मत और ओवरहाल कार्यों में स्थानीय सामग्री में उल्लेखनीय वृद्धि होगी। यह पहल एमएसएमई और सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों सहित भारत के रक्षा विनिर्माण ईकोसिस्टम के साथ सहयोग पर बल देती है। इससे रक्षा उत्पादन में देश की आत्मनिर्भरता मजबूत होती है।

एचएएल का संक्षिप्त इतिहास

एचएएल की यात्रा 80 साल से भी पहले शुरू हुई थी, जो भारतीय विमान उद्योग के साथ-साथ विकसित हुई। दूरदर्शी वालचंद हीराचंद द्वारा 23 दिसंबर 1940 को बैंगलोर में स्थापित हिंदुस्तान एयरक्राफ्ट लिमिटेड कंपनी का उद्देश्य घरेलू स्तर पर विमान बनाना था। 1941 में भारत सरकार एक शेयरधारक बानी और 1942 में पूर्ण प्रबंधन नियंत्रण अपने हाथ में ले लिया।

शुरू में एचएएल ने विदेशी कंपनियों से लाइसेंस के अंतर्गत विमान बनाने पर ध्यान केंद्रित किया। इसमें हार्लो ट्रेनर और कर्टिस हॉक फाइटर जैसे मॉडल का उत्पादन किया गया। 1951 में एचएएल रक्षा मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में आ गया और उसने स्वदेशी रूप से HT-2 ट्रेनर और HF-24 जेट फाइटर (मारुत) जैसे विमानों का डिजाइन और विकास करना शुरू किया।

प्रमुख उपलब्धिया

1. एकीकरण: 1964 में हिंदुस्तान एयरक्राफ्ट लिमिटेड का एयरोनॉटिक्स इंडिया लिमिटेड के साथ विलय हो गया और इसे परिचालन को सुव्यवस्थित करने के लिए “हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड” नाम दिया गया। इस प्रकार विमान डिजाइन, विकास, विनिर्माण और ओवरहाल पर केंद्रित एक अधिक मजबूत इकाई का गठन हुआ।

2. विविध उत्पादन: दशकों से एचएएल ने हेलीकॉप्टर, इंजन और उन्नत एवियोनिक्स सिस्टम को शामिल करने के लिए अपने उत्पाद रेंज का विस्तार किया। इसने भारत के अंतरिक्ष मिशनों का समर्थन करने के लिए एक समर्पित एयरोस्पेस डिवीजन की भी स्थापना की। यह इसरो के उपग्रहों और लॉन्च वाहनों के लिए घटकों का योगदान देता है। 1970 में मेसर्स एसएनआईएएस फ्रांस से लाइसेंस के अंतर्गत ‘चेतक’ और ‘चीता’ हेलीकॉप्टरों के निर्माण के लिए बैंगलोर में एक डिवीजन स्थापित किया गया था। कई कंपनियों के साथ लाइसेंस समझौते किए गए, जिनमें डनलप (पहिए और ब्रेक), डाउटी (अंडरकैरिज), और नॉर्मल एयर गैरेट (केबिन सिस्टम), साथ ही स्मिथस, एसएफईएनए, एसएफआईएम (उपकरण और जाइरो), मार्टिन बेकर (इजेक्शन सीट), और लुकास (ईंधन प्रणाली) विभिन्न विमानों के लिए शामिल हैं। मिग-21 सहायक उपकरण के लिए सोवियत अधिकारियों के साथ भी इसी तरह की व्यवस्था की गई थी।

3. अंतर्राष्ट्रीय सहयोग: एचएएल ने प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और संयुक्त उद्यमों के लिए कई अंतर्राष्ट्रीय साझेदारी की है। इससे सुखोई-30 एमकेआई के निर्माण सहित विमान उत्पादन की क्षमताओं में वृद्धि हुई है। वैश्विक खिलाड़ी बनने के एचएएल के मिशन के साथ-साथ, निर्यात को एक प्रमुख फोकस क्षेत्र के रूप में प्राथमिकता दी गई है। कंपनी ने एयरबस, बोइंग, रोल्स रॉयस, आईएआई और रोसोबोरोन एक्सपोर्ट सहित प्रमुख वैश्विक विमानन फर्मों को उच्च प्राथमिकता संरचना और समग्र कार्य पैकेज, असेंबली और एवियोनिक्स प्रदान करके विश्वसनीयता स्थापित की है।

निष्कर्ष

एचएएल को महारत्न कंपनी के रूप में मान्यता मिलना भारत के एयरोस्पेस और रक्षा क्षेत्रों में इसके विकास, लचीलेपन और रणनीतिक योगदान का प्रमाण है। यह उपलब्धि न केवल एचएएल की मजबूत वित्तीय सेहत को दर्शाती है, बल्कि रक्षा उत्पादन में भारत की आत्मनिर्भरता को आगे बढ़ाने और एयरोस्पेस उद्योग में अपनी वैश्विक स्थिति को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका को भी रेखांकित करती है।

संदर्भ:

https://x.com/DPE_GoI/status/1844998712512176573

https://hal-india.co.in/our-history

https://sansad.in/getFile/loksabhaquestions/annex/172/AU2444.pdf?source=pqals

https://dpe.gov.in/en/about-us/policy-i-division/list-maharatna-navratna-and-miniratna-cpses-0

https://pib.gov.in/newsite/erelcontent.aspx?relid=96030

https://pib.gov.in/Pressreleaseshare.aspx?PRID=1541715

https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2053088

Click here to see in PDF:

एमजी/आरपीएम/केसी/एसके/डीके

(Backgrounder ID: 153278)